M.A. (Previous) EXAMINATION, 2017

HINDI

Third Paper

तृतीय पत्र–प्राचीन काव्य

Time allowed : Three hours **Maximum marks : 100**

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) ''कुट्टिल केस सुदेष, पौह परचियत पिक्क सद
कमलगंध वयसंध, हंसगति चलत मंद-मंद।
सेत वस्त्र सोहै सरीर, नष स्वाति बुंद जस
भमर भंवहि भुल्लहिं, सुभाव मकरंद वास रस
नैन निरखि सुष पाय सुक, यह सदिन मूरति रचिय
उमा प्रसाद हर हेरियत, मिलहिं राज प्रथिराज जिय।'' 9

अथवा

चढ़िय राज प्रथिराज, छाड़ि साहाबदीन सुर
त्रिपत सूर सामंत, बजत नीसान गजत धुर
चन्द्र बदनि मृगनयनि, कलस लै सिर सनमुष्प जुष
कनक थार अति बनाय मोतिन बनाय सुष
भंडल भंयंक वर नार सब आनंद कंठह गाइयव
ढौंरत चवर किक्कर करहिं, मुकट सीस तिक छु दियव। 9

(ख) रितु पावस बरसे, पिउ पावा। सावन भादो अधिक सोहावा॥
पद्मावती चाहति ऋतु पाई। गगन सोहावन भूमि सोहाई॥
कोकिल बैन, पांति बग छूटी। धनि निसरीं जनु बीर बहूटी॥
चमक बीजु, बरसै चल सोना। दादुर मोर सबद सुठि लोना॥
रंग-राती पीतम संग जागी। गरजे गगन चौंकि गर लागी॥
सीतल बूंद, ऊंच चौपारा। हरियर सब देखाइ संसारा॥
हरिहर भूमि, कुसुँभी चौला। औ धनि पिउ संग रचा हिंडोला॥
पवन झकोरे होइ हरष, लागे सीतल बास।
धनि जानै यह पवन है, पवन सो अपने पास॥ 9

अथवा

पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा निति बोलै पिउ पीऊ॥
अधिक काम दाधै सौ रामा। हरि लेइ सुबा गएउ पिउ नामा॥
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीज, भींजि गए चोली॥

सूखा हिया, हार भा भारी। हरे हरे प्रान तजहिं सब नारी॥
खन एक आव पेट मँह! सासा। खनहिं जाइ जिउ, होइ निरासा॥
पवन डोलावहिं, सीचहिं चोला। पहर एक समुझहिं मुख-बोला॥
प्रान पयान होत को राखा ? को सुनाव पीतम कै भाखा ?
आहि जो मारै बिरह कै, आगि उठै तेहि लागि॥
हंस जो रहा सरीर मह, पांख जरा, गा भागि॥ 9

(ग) काहे री नलिनी तू कम्हिलानी
तेरे ही नालि सरोवर पानी
जल में उतपति, जल में बास जल में नलनी तोर निवास
ना तलि तपति न ऊपरि आगि,
तोर हेतु कदु कासनि लागि
कहै कबीर जे उदिक समान,
ते नहीं मुए हंमारे जान। 9

अथवा

मन रे जागत रहिये भाई
गाफिल होइ बसत मति खोवै, चौर मुसै घर जाई
षट चक्र की कनक कोठड़ी, बस्त भाव है सोई
ताला कुंजी कुलफ के लागे, उघड़त बार न होई
पंच पहरवा सोइ गये हैं, बसतैं जागण लागी
जुरा मरण व्यापै कछु नाहीं, गगन मंडल लै लागी
करत विचार मन ही मन उपजी, ना कही गया न आया
कहै करीब संसा सब छूटा, राम रतन धन पाया। 9

(घ) "माधब तोहे जनु जाह बिदेस
हमरो रंग रभस लए जएबह, लएबह कओन संदेश
बनहि गगन करु होएति दोसर मति, बिसरि जाएब पति मोरा
हीरा मनि मानिक एको नाहि माँगब, फेरि माँगब पहु तोरा
जखन गगन करु नयन नीर भीरु, देखियो न भेल पहु ओरा
एकहि नगर बसि पहु भेल पर-बस, कइसे पुरत मन मोरा
पहु संग कामिनी बहुत सोहागिनी, चंद निकट जइसे तारा
भनइ विद्यापति सुनु बर जौबति, अपन हृदय धरु सारा।" 9

अथवा

माधब, बहुत मिनित कर तोय
दए तुलसी तिल देह समर्पित, दया जनि छाड़बि मोय
गनइत दोसर गन लसे न पाओबि, जब तूँह करबि विचार

तुहु जगत जगन्नाथ कहाओसि, जग बाहिर नइ छार
किए मनुस पसु पखि भए, जनमिए अथवा कीट पतंग
करम बिपाक गतागत पुनु-पुनु मति रह तुअं परसंग
भनइ विद्यापति अतिसय कातर, तरइत इह भब-सिन्धु
तुअ पद-पल्लब करि अबलम्बन, तिल एक दहे दिनबन्धु। 9

2. रासो काव्य परम्परा का विवेचन करते हुए, पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता-अप्रमाणिकता पर अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

महाकाव्य के लक्षणों का उल्लेख करते हुए, पृथ्वीराज रासो के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिए। 16

3. ''जायसी के काव्य में प्रकृति के अनेक सुन्दर और हृदयग्राही स्थल हैं जिनसे उनके सूक्ष्म निरीक्षण और अनुभव शक्ति का पता चलता है।'' इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

अथवा

हिन्दी प्रेमाख्यान काव्य-परम्परा का सामान्य परिचय देते हुए उसमें जायसीकृत पद्मावत का स्थान निर्धारित कीजिये। 16

4. कबीर के रहस्यवाद पक्ष को सोदाहरण निरूपित कीजिये।

अथवा

''आज करीब सर्वाधिक प्रासंगिक कवि हैं।'' कबीर के सामाजिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में इस कथन पर विचार कीजिये। 16

5. ''विद्यापति के विरह चित्रण में भाव और कल्पना का तथा अनुभूति और तन्मयता का अपूर्व सामंजस्य है।'' इस कथन के अनुसार विद्यापति के विरह-वर्णन का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

भाव पक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से 'विद्यापति पदावली' की समीक्षा कीजिए। 16